

चलीं राधा विरज की ओर
सुहानी लागें कुन्ज गलियाँ.

तेरी लो चाल बड़ी रे मतबारी ॥२॥
जैसे वन में चलत है मोर---

सुहानी लागें--- चलीं राधा---

नाक-नथनियाँ लगे प्यारी प्यारी ॥२॥
लगे नैना बड़े री चित वोर

सुहानी लागें--- चलीं राधा---

चंदा जैसे तुम्हारे री मुखड़ा ॥२॥
काहे डारे री कन्हैया डोर

सुहानी लागें--- चलीं राधा---

पाँव पैजनिया हूमा-हूम बाजें ॥२॥
लगी प्यारी विरज की भोर

सुहानी लागें--- चलीं राधा---

लौट विरज से घर को चलीं हैं ॥२॥
कहें दास "श्रीबाबाश्री" कर जोर

सुहानी लागें--- चलीं राधा---